॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

वर्ष : 18 अंक : 14 25 जुलाई 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश पर फासिस्टों का हमला

इसीलिए तो नगर-नगर बदनाम हो गए मेरे आँसू मैं उनका हो गया कि जिनका कोई पहरेदार नहीं था

– सत्यव्रत सामवेदी

जयपुर। समाचार पत्रों में 19 जुलाई को झारखंड में स्वामी अग्निवेश पर फासिस्टों के हमले से सारा देश आक्रोश की आग में जलने लगा। स्वामी अग्निवेश लिट्टिपाडा में अखिल भारतीय जनजाति विकास समिति की 195वीं वर्षगाठ पर आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंचे थे। स्वामी अग्निवेश शोषितों, मजदूरों, किसानों और दलितों की आवाज हैं और शोषित आदिम जाति के पक्ष में आवाज उठाने के कारण पूंजीपतियों के गुर्गों ने ही उन पर हमला किया। साम्प्रदायिक ताकतों ने सम्प्रदाय विरोधी संगठनों पर हमला बोल दिया है। महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में पाखण्ड, अंधविश्वास के विरुद्ध आवाज उठाने वाले गोविन्द पंसारे एवं नरेन्द्र दाभोलकर तथा कर्नाटक में एम.एम. कलबुर्गी एवं गौरी लंकेश की हत्या कर दी गई। स्वामी अग्निवेश पर उस दिन हमला हुआ जिस दिन सर्वोच्च न्यायालय ने भीड़तंत्र को कुचलने के लिए केन्द्रीय सरकार को निर्देश दिए थे।

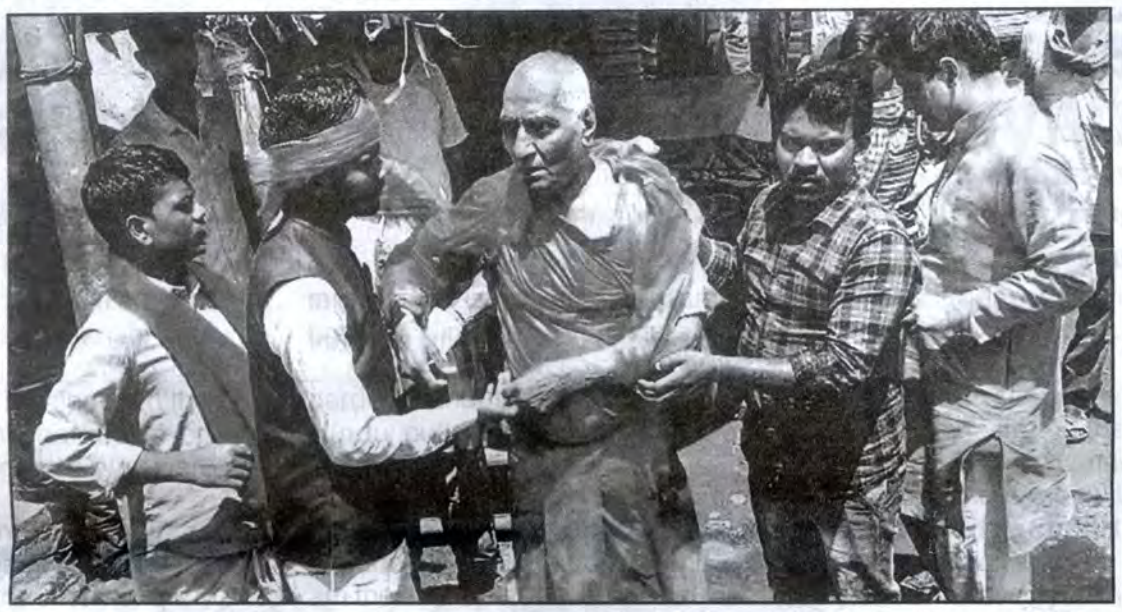

आर्य समाज हिन्दू धर्म के प्रतिगामी, पाखण्डी, शोषक, जातिवादी तत्वों के खिलाफ हमेशा आंदोलन करता आया है। उसकी आर्य समाज को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। इन्हीं ताकतों ने पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। महाराष्ट्र तो प्रतिगामी शक्तियों का हमेशा केन्द्र रहा है। भारतवर्ष के इतिहास के अमिट हस्ताक्षर महादेव गोविन्द रानाडे महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानते थे एवं जब महर्षि पूना से प्रस्थान करने लगे तो गोविन्द रानाडे एवं उनके साथियों ने महर्षि के सम्मान में शोभायात्रा निकालने का निर्णय लिया। समारोह यात्रा में आरंभ में 300-400 मनुष्य थे परंतु नगर तक पहुंचते-पहुंचते उनकी संख्या तीन-चार सहस्र हो गई थी। स्वामी जी का इस प्रकार सम्मान होता देखकर विद्वेषियों के हृदय ईर्ष्या की आग से जलने लगे। उनके कलेजों पर बर्छियां चल गई। उन्होंने दयानन्द समारोह यात्रा के उपहासार्थ एक गर्दभ समारोह यात्रा निकालने का प्रबन्ध किया। एक गदर्भ को सजाया, उस पर गेरुएं रंग की अर्थात् स्वामी जिस रंग के वस्त्र पहनते थे उस रंग की झूल डाली। उस पर 'गर्दभानन्द सरस्वती' लिखा और उसके आगे बाजा बजाते और गर्दभानन्द की जय, दयानन्द गदहे की जय बोलते हुए नगर के बाजारों में घूमने लगे। विपक्षियों का एक बड़ा दल इस गर्दभ यात्रा के साथ हुआ, नगर के लुच्चे, लुङ्गाडे, गुण्डे और लफंगे उपद्रव की तैयारी करने लगे। यह समारोह यात्रा सायंकाल के पांच बजे कैम्प से चली थी और जब साढ़े सात बजे समारोह यात्रा सम्मेलन स्थल भिड़े पर पहुंचने वाली थी तब गर्दभ दल भी आ पहुंचा और उसने स्वामी गदहे की जय, स्वामी गदहे की जय, दयानन्द गदहे की जय बोलना आरंभ किया। गर्दभ दल के लोगों ने मशालें बुझा दी और स्वामी जी के पक्ष वालों पर ईंट, पत्थर, गोबर, कीचड़ फैकना आरंभ कर दिया। गली के सब और से मकानों की छतों और खिड़कियों से ईंटें बरसने लगी, कई लोगों को चोटें आई। यह उपद्रव रात्रि के दस बजे तक इसी प्रकार चलता रहा। जो पुलिस वाले स्वामी जी की समारोह यात्रा के साथ थे वे खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे। उन्होंने उपद्रव को शांत करने का कोई यत्न नहीं किया। अतिरिक्त पुलिस दल ने अंत में उपद्रव को शांत किया। फिर भी गर्दभ दल के लगभग एक हजार मनुष्य बुधवार पेठ में खड़े रहे। शांति स्थापित होने पर स्वामी जी ने अपना व्याख्यान दिया परंतु उन्होंने उसमें इस उपद्रव का उल्लेख तक नहीं किया। उनकी चित्त की शांति एक क्षण के लिए भी भंग न हुई, वे सदा की भांति प्रफुल्ल वदन थे, उनके मुखमण्डल पर चिंता का चिन्ह लगना था। जिस समय सभा विसर्जन हुई उस समय 12 बज गये थे। इंस्पेक्टर ट्रेने बराबर सभास्थल में उपस्थित रहे। व्याख्यान की समाप्ति पर उन्होंने स्वामी जी से कहा कि 'आज की रात्रि आप भिडे के बाडे में ही शयन करें क्योंकि बाहर जाने से आप पर आक्रमण होने का भय है।' स्वामी जी ने कहा आपका कार्य रक्षा करना है आप अपना कार्य करें हम तो निवास स्थान पर ही जाकर सोएंगे। इस पर पुलिस विवश होकर स्वामी जी के साथ गई और उन्हें उनके निवास स्थान पर पहुंचा आई। उस समय भी विपक्षी दल ने जो बराबर डटा खड़ा था स्वामी जी और पुलिस पर ईंटें फेंकी परंतु महर्षि चट्टान के सदृश अटल थे जिससे टकरा कर विरोध की लहरे छिन्न-भिन्न हो जाती हैं। वे परमेश्वर से नित्य प्रति अदीना:स्याम की सच्चे मनोयोग से प्रार्थना करते थे ओर परमेश्वर के आशीर्वाद से अदीन हो गए थे। क्या दयानन्द के अनुयायियों ने उनके इस गुण को धारण किया है? क्या वे भी वैसे ही मनोयोग से संध्या में बैठ कर अदीन होने की प्रार्थना करते हैं, यदि नहीं तो ये दीन अदीन दयानन्द का काम कैसे पूरा करेंगे। हमें प्रसन्नता है कि आर्य जगत में एक ऐसा व्यक्ति है जो महर्षि की तरह अदीन है और हिन्दू धर्म के पाखण्ड, अंधविश्वास, साम्प्रदायिकता की धज्जियां

उड़ाता है। जिस पाखण्ड, अंधविश्वास, जातिवाद के कारण हमारा देश हजारों साल तक गुलाम रहा वही बुराइयां जड़ पकड़ने लगी है। जब स्वामी अग्निवेश इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं और मनुर्भव का संदेश देते हैं तो 50 प्रतिशत हिन्दू उनकी आवाज की सराहना करते हैं परंतु 75 प्रतिशत आर्य समाज के अनुयायी जल कर राख हो जाते हैं। आर्य समाज कोई भवन नहीं है, कोई जड़ वस्तु नहीं है, कोई गगनचुम्बी मंदिर की चोटी नहीं है वह तो एक क्रांति है इसे आर्य समाजी भूल गए हैं। समय का तकाजा है कि हम इन प्रतिगामी शक्तियों का संगठित होकर मुकाबला करें अन्यथा आर्य समाज का भी कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। इस भीड़तंत्र एवं साम्प्रदायिक, पाखण्डी, अंधविश्वासी ताकतों के विरुद्ध प्रगतिशील ताकतें संगठित होने लगी हैं।

35 संगठनों की केन्द्र और राज्य सरकार के खिलाफ महापंचायत

प्रदेश में दलित, अल्पसंख्यक और आदिवासियों पर बढ़ते हमलों को लेकर प्रदेश के 35 से ज्यादा सामाजिक और मानवाधिकार संगठनों ने रविवार को जयपुर में महापंचायत की। अल्पसंख्यकों व दलितों पर हुए हमलों के खिलाफ महापंचायत में मौजूद सभी लोगों ने शपथ ली कि केन्द्र व राज्य की मौजूदा सरकार को हराने के लिए प्रदेशभर में दमन प्रतिरोध आंदोलन चलाया जाएगा।

वक्ता बोले- नफरत का माहौल है, कौन फैला रहा इसकी जांच हो

बाबा साहब डा. भीमराव अंबेडकर के पौत्र प्रकाश अंबेडकर ने कहा- पहले जो संगठन लोगों को भड़का दंगा करवाते थे अब वे खुलेआम लोगों की पीट-पीटकर हत्या करने लगे हैं। इतनी नफरत कैसे आई, इसकी जांच होनी चाहिए थी।

गुजरात के विधायक व दलित नेता जिग्नेश मेवानी बोले- केन्द्र में नरेन्द्र मोदी और राजस्थान में वसुंधरा राजे की सरकार को हराना बहुत जरूरी है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो फासीवाद हमारे दरवाजे पर होगा। अलवर में अकबर खान की हत्या को लेकर मेवानी ने केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल को आड़े हाथों लिया। प्रधानमंत्री की लोकप्रियता का मतलब ये नहीं है कि अल्पसंख्यक और बेगुनाहों को अपनी जान से हाथ धोना पड़े।

राष्ट्रीय दलित शोषण मंच की उपाध्यक्ष सुभाषिनी अली ने कहा- केन्द्र सरकार चाहती है कि दलित पिछड़ा रहे और उसे इसी तरह पीट-पीटकर मारा जाता रहे। जब सरकार के मंत्री ही इस हिंसा का बखान कर रहे हो तो ये घटनाएं कैसे रुकेंगी।

मध्यप्रदेश के किसान नेता डा. सुनीलम ने कहा- दलित, आदिवासी, मुसलमान, किसान, युवा, छात्र व महिलाओं को एक साथ मिलकर लड़ाई लड़नी होगी। यह देश के अस्तित्व और इंसानियत को जिंदा रखने की लड़ाई होगी।

भाकपा माले के पूर्व विधायक राजाराम सिंह ने कहा केन्द्र सरकार की हर नीति चाहे वह सामाजिक न्याय की हो या विदेश संबंधी, नोटबंदी हो या जीएसटी, सभी फ्रंट पर फेल रही हैं, इस सरकार से अब कोई उम्मीद नहीं की जा सकती।

महापंचायत में 35 से ज्यादा जनसंगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने 2 अप्रैल के आंदोलन में दर्ज सभी मुकदमें वापस लेने, एससी, एसटी कानून को संविधान की 9वीं सूची में शामिल करने और गौरक्षा के नाम पर होने वाली हत्याओं में शामिल लोगों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की।

यह असंतोष की आग शीघ्र ही दावानल बन जाएगी। आर्य समाज को इन प्रगतिशील संगठनों को सहयोग देना चाहिए और इनका नेतृत्व करना चाहिए। आर्य समाज की प्रतिगामी शक्तियों के लिए यह चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है कि 22 जुलाई को जब सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में जन्तर-मन्तर पर स्वामी अग्निवेश पर हमले के विरुद्ध धरना दिया गया तो आर्य समाज के अनुयायी गायब रहे जबकि सारे उत्तर भारत में गैर आर्य समाजी इस हमले के विरुद्ध धरने-प्रदर्शन और रैलियां आयोजित कर रहे हैं।

दुर्भाग्य से मेरे ऊपर गत आठ महिनों से व्याधियों के आक्रमण हो रहे हैं। कुछ मास पूर्व मुझे पक्षाघात हुआ। ईश्वर की कृपा से मैं शीघ्र ही चलने-फिरने लगा परंतु अभी भी लम्बी यात्रा के लायक नहीं हुआ। इन क्रांतिकारी कार्यक्रमों के लिए मैंने स्वामी जी से अनेक बार आग्रह किया है। उनके नेतृत्व में आर्य समाज में क्रांतिकारी संगठन खड़ा हो गया तो ठीक है नहीं तो अंधकार ही अंधकार है। इसके लिए हमें दिल्ली में कम से कम एक हजार कार्यकर्ताओं का संगठन गठित करना चाहिए जो प्रतिमास संसद के सामने जन समस्याओं को लेकर प्रदर्शन करे। स्वामी और उनके साथियों के लिए इस प्रकार का संगठन खड़ा करना कोई कठिन कार्य नहीं है परंतु संकल्प की आवश्यकता है।

स्वामी अग्निवेश पर हमले के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में जंतर मंतर पर धरना एवं प्रदर्शन

नई दिल्ली। दिनांक 22 जुलाई, 2018 को जन्तर-मन्तर पर धरना प्रदर्शन किया गया, जिसमें देश के कई प्रान्तों से लोग पहुँचे। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, दिल्ली, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा कई अन्य राज्यों से भी लोग पधारे। बारिश होने के बावजूद भी लोग धरने प्रदर्शन में डटे रहे।

धरने प्रदर्शन के मुख्य संयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी जी के ऊपर हुए प्राणघातक हमले की घोर निन्दा करते हुए राष्ट्रपति को ज्ञापन सौंपकर आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन की तरफसे स्वामी जी के ऊपर हुए हमले के सम्बन्ध में कई मांगे रखी है। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने स्वामी के ऊपर हमले के सम्बन्ध में विस्तार से बताते हुए कहा कि यह पूरा घटनाक्रम एक षड्यन्त्र के तहत किया हुआ लगता है। क्योंकि स्वामी जी जब भी कहीं जाते हैं तो उसकी सूचना वहाँ की सरकार तथा राजभवन को अवश्य देते हैं। और झारखण्ड जाने से पहले भी उन्होंने मुख्यमंत्री तथा राजभवन के कार्यालय में बात करके अपने आने की सूचना दे रखी थी, उसके बावजूद भी स्वामी जी साथ इस तरह की घटना हो जाना एक षड्यन्त्र ही दिखाई देता है, जिसकी हम सब घोर निन्दा करते हैं तथा वहाँ के नगर विकास मंत्री श्री सी.पी. सिंह को बर्खाश्त करने की मांग करते हैं जो इस तरह की घटना पर अनर्गल बकवास कर रहे हैं। स्वामी अग्निवेश जी पर हमला कोई मामूली घटना नहीं है, यह पूरे आर्य समाज पर हमला है। स्वामी दयानन्द जी के विचारों पर हमला है जिसे हम सब सहन नहीं करेंगे। हम विचार और सिद्धान्त पर चलने वाले व्यक्ति हैं हम इस तरह की घटना से डरने वाले नहीं हैं। हम लोग सभी संघर्ष करेंगे और आर्य समाज का पुराना इतिहास गवाह है आर्य समाज कभी भी संघर्ष से पीछे हटने वाला नहीं है। सभा मंत्री ने कड़े शब्दों में चेतावनी देते हुए सरकार में बैठे लोगों को ललकारा है कि यदि उचित कार्यवाही नहीं होगी तो इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी स्वामी के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की तथा स्वामी अग्निवेश जी द्वारा समाज के हित के लिए किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और आर्य समाज के लोगों का आह्वान किया कि वे सब संगठित होकर देश में फैले पाखण्ड और अन्धविश्वास को जड़मूल से खत्म करने के लिए संघर्ष करें और सभी लोग स्वामी जी के साथ खड़े हों। डॉ. वैदिक जी भीड़ को देखकर गद-गद हुए और कहा कि इतने कम समय में इतनी बड़ी संख्या यहाँ पर जुटी है जिससे मैं बहुत ही खुश हूँ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने भी स्वामी जी का पक्ष रखते हुए उनके साथ खड़े होने की घोषणा की तथा असामाजिक तत्वों के खिलाफ कड़ी से कड़ी सजा की मांग की और स्वामी जी पर हुए कातिलाना हमले की घोर निन्दा की।

पलवल से पधारे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर.एस.एस. के लोगों को ललकारा और वैचारिक क्रांति के लिए चुनौती देते हुए कहा कि इस प्रकार की घटना से हम लोग डरने वाले नहीं हैं और हम इसका मुकाबला डटकर करेंगे।

उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री स्वामी ओमवेश जी ने इस घटना की घोर निन्दा करते हुए कहा कि यदि किसी गुण्डों में दम है तो हमसे टकरा कर देखें हम उन्हें मजा चखा देंगे, साथ ही उन्होंने आर्य समाज के लोगों को सचेत किया कि हमारे बीच में जो घुसपैठिये बैठे हुए हैं उनको पहचान कर उन्हें आर्य समाजों से बाहर करना होगा और पूरे देश में आर्य समाज के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

स्वामी अग्निवेश पर हमला समाचार पत्रों के दर्पण में

Agnivesh demands judicial probe into attack on him

Ranchi : Social activist Swami Agnivesh on Wednesday dismissed a probe into an attack on him in Pakur as an eyewash and accused the BJP governmentin Jharkhand of sponsoring the assault even as the state's urban development minister CP Singh said the former was a 'fraud' who orchestrated the attack on himself.

A day after he was thrashed allegedly by BJP youth wing workers, Agnivesh said he wanted to raise the issue with Jharkhand governor Droupadi Murmu but could not meet her on Wednesday as his appointment at 11am was cancelled.

But the Raj Bhawan denied that Agnivesh had a prior appointment with the governor.

"Since governor had a scheduled engagement, Agnivesh was informed that the meeting would not be possible today," said a Raj Bhawan official.

Meanwhile, urban development minister denied the involvement of any Bharatiya Janata Yuva Morcha (BJYM) workers in the assault onAgnivesh.

"I know agnivesh for last 40 years. He is an old fraud. He sponsored the attack on himself. No BJYM worker was involved in the assault," Singh said.

Singh's statement is contrary to the Pakur police's press release on Tuesday, which categorically said '100 BJYM workers had thrashed him'. Pakur police have registered an FIR naming eight people, including BJYM Pakur president Prasanna Mishra. Ninety two others have been listed as unknown people in the FIR. A special investigation team (SIT) has also been set up to nab the accused.

Flanked by opposition leaders, including former chief minister Babula Marandi and former union minister Subodh Kant Sahai, Agnivesh told reporters in Ranchi on Wednesday that the DIG (deputy inspector general) level investigation, et up by the government, was an eye wash.

"For Impartial investigation, I had demanded judicial probe by any high court judge or retired judge," he said.

He alleged the government and local administrationhad prior information of his arrival in Jharkhand but they neither informed him about any threat nor arranged any security for him. "I had informed the chief minister Raghubar Das on July 12 that I would be arriving in Jharkhand. I wanted to meet him on July 16, but he did not given me time," he said. "The organizer of the tribal fest had provided my entire schedule to the local administration but not even a single security personnel was there when I was thrashed. This negligence shows that the attack on me was planned and government sponsored."

The 78-year-old activist was in Pakur to address a tribal festival organised to commemorate the 195th foundation of Damin-i-koh, part of land allocated to Santhals, at Littipara stadium, arround 350 km northeast from the state capital.

Agnivesh said over one lakh tribal, mostly primitive tribe, had gathered at the venue and he was to address them about Panchayats (Extension to Scheduled Areas) Act, 1996 or PESA.

"The Act came into existence in 1996 but the state assembly is yet to frame rules for it," he said, adding, tribal rights and their lands are being taken away.

Opposition legislators raised the issue in assembly and demanded immediate arrest of the culprits.

Parliamentary afair minister Neelkanth Singh Munda informed the house that the government has taken the issue seriously. "The chief minister without making any delay ordered a probe. Santhal Paragana commissioner and deputy inspector general have been asked to investigate into the matter," Munda said inthe assembly.

'My attackers were not a faceless lynch mob'

Picture of 78-year-old Swami Agnivesh being beaten up, his saffron robes torn, came at a time when the Supreme Court was laying down strictures against 'mobocracy'. He tellsHimanshi Dhawan why hardline Hindutva which doesn't brook dissent must be nipped in the bud

Q. You were in Jharkhand on the invitation of a tribal group. Why were you attacked?

Ans. I had gone to Pakur on the invitation of the Paharia tribe. Before that, I had informed both the Jharkhand CM and governor about my visit. On 17th morning, I was speaking to the press about the problems faced by the tribals with their land and forest rights in danger when I was informed that members of the Bharatiya Janata Yuva Morcha were outside protesting against me. I invited them to come inside and speak tome. But they did not agree. When I stepped out, I was attacked by a crowd of 100-150 people who swooped on me. I was dragged, beaten up, abused, and my clothes torn. It was a lynch mob, except it was not a faceless lynch mob but one that was sponsored and supported by the powers that be in the state and central governments. I am not the first one to be attacked, many more have been lynched to death. Akhlaq Khan was killed in Dadri, so were Pehlu Khan and Junaid, and not a single murderer has been apprehended.

Q. So far these lynch mobs have targeted members of the minority community. Do you think you were a target because as an Arya Samaji, Your brand of Hindutva is considered too soft?

Ans. Very much so. What they called hardline Hindutva is the greatest threat to Hindu culture, or sanatan dharam. I believe in fighting against caste, bonded labour, for equality of women and Dalits and have done so for decades. These pseudo-Hindus or hardline Hindus think I am the enemy of Hinduism. But I tell them that this is not Hinduism. Hindu culture has survived because of our amorphous character and the culture of dialogue. The hardline approach of causing harm to whoever disagrees is a kind of nascent fascism. If we don't nip it in the bud, it will cause immense harm.

Q. The Supreme Court has directed the government to ensure that the country does not slip into a mobocracy. Do you think it already has?

Ans. Just giving a verdict is not enough unless the apex court appoints its own monitoring committee to look at every case. The day they were delivering this verdict I was being beaten up. I want this whole episode to be investigated by a sitting or retired judge. Why were the eight people arrested for attacking me let off immediately?

Q. But the Jharkhand government has ordered an inquiry.

Ans. I don't trust the police. I had no security despite informing the state government of my visit. Even after I was attacked, no police came till half an hour.

Q. A Jharkhand minister and some people on social media have alleged that you orchestrated the attack for publicity.

Ans. It is a laughable statement. I don't blame those speaking like this. I have received support beyond all my expectations.

Q. What do you think needs to be done to counter hate crimes?

Ans. We need to unite all the forces of social justice, all democratic forces, and all those who abide by the Indian Constitution. They urgently need to come together whether they belong to social, religious organisations or political parties. The 2019 election is the biggest challenge. We have to face this challenge. All these attacks are happening at the behest of this government.

Q. You were among the first signatories to campaign for the repeal of Section 377. Do you think the time has come for India to respect LGBT rights?

Ans. I saluted Chief Justice A.P. Shah's judgment in Delhi High Court. I am sure the SC order, whenever it comes, will uphold the dignity of all human beings, whether gay or lesbian.

(सम्बंधित खबरें पृष्ठ 4 पर भी देखें)

मॉब लिंचिंग : कानून बनने तक सुप्रीम कोर्ट की केंद्र व राज्यों के लिए गाइडलाइंस

भीड़तंत्र को देश नहीं रौंदने दे सकते, संसद इस पर जल्द ही कानून बनाए - सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। भीड़ के हाथों लगातार हो रही हत्याएं रोकने के लिए मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों को गाइडलाइंस जारी कीं। साथ ही इसे रोकने के लिए संसद को कानून बनाने पर विचार करने को कहा। कोर्ट ने कहा- भीड़ के हाथों हत्याएं, पिशाच का रूप ले सकती हैं। झूठी खबरों से जन्मीं असहिष्णुता देश में उथल-पुथल मचा सकती है।

चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा की बेंच ने कहा कि भीड़तंत्र को देश का कानून रौंदने की इजाजत नहीं दे सकते। जांच, ट्रायल या सजा सड़कों पर नहीं हो सकती। ऐसा करने वालों को सजा देना सरकारी एजेंसियों की जिम्मेदारी है। सम्मान के साथ जीने से बड़ा कोई हक नहीं है। कानून व्यवस्था कायम रखना राज्यों की जिम्मेदारी है। कोर्ट ने केंद्र व राज्य सरकारों से 4 हफ्ते में रिपोर्ट मांगी है। अगली सुनवाई 20 अगस्त को होगी।

सरकार भीड़ की हिंसा के खिलाफ प्रचार-प्रसार करे

राज्य सरकारें हर जिले में एसपी स्तर के अधिकारी को नोडल अफसर बनाएं। वह डीएसपी स्तर के अफसर के निर्देशन में स्पेशल टास्क फोर्स बनाए।

सरकार ऐसे इलाकों की पहचान करे, जहां मॉब लिंचिंग की घटनाएं हुई हों। इसे रोकने के लिए नोडल ऑफिसर लोकल इंटेलिजेंस से और डीजीपी-गृह सचिव नोडल अफसर से मीटिंग लें।

पुलिस संवेदनशील क्षेत्रों में पैट्रोलिंग बढ़ाए। केंद्र व राज्य समन्वय रखें। भीड़ की हिंसा के खिलाफ प्रचार करें।

पीड़ितों को चोट के मुताबिक मुआवजा राशि मिले

मॉब लिंचिंग की कोई भी घटना होती है तो लोकल पुलिस तुरंत एफआईआर दर्ज करे। और वहां का थाना प्रभारी तत्काल नोडल अधिकारी को बताए।

नोडल अधिकारी की निगरानी में निष्पक्ष जांच हो। फास्ट ट्रैक कोर्ट में केस चले। कोर्ट अधिकतम सजा दे।

राज्य सरकार पीड़ितों को मुआवजे के लिए योजना बनाए। चोट के मुताबिक मुआवजा राशि तय करे। पीड़ित के वकील का खर्च भी सरकार वहन करे।

केंद्र व राज्य सरकार की जिम्मेदारी है कि वह अफवाह या गलत सूचना के प्रसारण रोकने के लिए कदम उठाए।

दंडात्मक- मॉब लिंचिंग मामले में लापरवाही बरतने वाले पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

कोर्ट के आदेश के 3 घंटे बाद झारखंड में भीड़ की हिंसा

जय श्री राम के नारे लगाती भीड़ ने 79 साल के स्वामी अग्निवेश को पीटा

पाकुड़ (झारखंड)। भाजयुमो, एबीवीपी के लोगों ने मंगलवार को सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश के साथ मारपीट की। घटना झारखंड के पाकुड जिले की है। 79 साल के अग्निवेश मंगलवार को होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस करके निकले ही थे कि बाहर भीड़ ने काले झंडे दिखाकर जय श्रीराम और अग्निवेश वापस जाओ के नारे लगाए। अग्निवेश को लात, घूंसों, ईंट से मारा गया। उन्हें गंभीर चोटें आई हैं। भाजयुमो-एबीवीपी का आरोप है कि अग्निवेश पहाड़िया समाज को भड़का रहा है। वे पहाड़िया समुदाय के कार्यक्रम में आए थे।

स्वामी अग्निवेश पर हुआ हमला निंदनीय, जताया विरोध

राजस्थान पत्रिका

जयपुर। आदर्श नगर स्थित आर्य समाज में बुधवार को बैठक हुई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में पाकुड़ (झारखंड) में हुए स्वामी अग्निवेश पर हमले की भर्त्सना की गई। हाईकोर्ट के पूर्व जज पानाचन्द जैन एवं आई.एस. ईसरानी, पूर्व मुख्य न्यायाधिपति एस.एन. भार्गव एवं नवरंगलाल टिबरेवाल व पूर्व आईएएस अधिकारी सत्यनारायण सिंह ने निन्दा की।

भीड़तंत्र के खिलाफ राष्ट्रव्यापी आंदोलन होगा-सामवेदी

जयपुर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में बुधवार को आर्य समाज आदर्श नगर में समाज के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई और उसमें कट्टरपंथी लोगों की ओर से स्वामी अग्निवेश पर हमले की भर्त्सना की गई। इस अवसर पर सामवेदी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश पर उस दिन हमला हुआ जब सर्वोच्च न्यायालय ने भीड़तंत्र के विरुद्ध सख्त कार्रवाई का निर्णय दिया। उन्होंने कहा कि हमला करने वालों को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी और इसका परिणाम 2019 के चुनावों में सामने आ जाएगा। वहीं हमले की निन्दा पूर्व न्यायाधिपति पानाचन्द जैन, आई.एस. ईसरानी, एस.एन. भार्गव, नवरंग लाल टिबरेवाल एवं पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सत्यनारायण सिंह ने की है।

स्वामी अग्निवेश पर हमले की निंदा, आक्रोश जताया

दैनिक भास्कर dainikbhaskar.com

जयपुर। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में बुधवार को आदर्श नगर में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। बैठक में कट्टरपंथी लोगों द्वारा स्वामी अग्निवेश पर हमले की निंदा की गई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि किसी भी सूरत में ऐसे लोगों को हावी नहीं होने दिया जाएगा। इसके लिए जन जागृति अभियान चलाया जाएगा, जिससे ऐसे लोग फिर से दुस्साहस नहीं कर सके।

भीड़तंत्र के खिलाफ राष्ट्रव्यापी आंदोलन होगा-सामवेदी

स्वामी अग्निवेश पर हमले से आर्य जगत में आक्रोश

समाचार जगत

जयपुर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वामी अग्निवेश पर हमले की कठोर निन्दा करते हुए आक्रोश व्यक्त किया है। संस्था के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में आर्य समाज, आदर्श नगर में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की सम्पन्न बैठक में कट्टरपंथी, पाखण्डी, अंधविश्वासी लोगों द्वारा स्वामी अग्निवेश पर हमले की भर्त्सना की गई। आर्य समाज के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रांतिकीर संन्यासी स्वामी अग्निवेश पर झारखंड के पाकुड में हुए हमले की आर्य समाज के अंतरराष्ट्रीय संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने भर्त्सना करते हुए कहा है कि स्वामी अग्निवेश पर उस दिन हमला हुआ जब सर्वोच्च न्यायालय ने भीड़तंत्र के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने का निर्णय दिया और सरकारों को एक सप्ताह में भीड़तंत्र पर नियंत्रण के लिए कानून बनाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि इस घटना के विरोध में भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत और जिले में भीड़तंत्र के खिलाफ धरने, प्रदर्शन, रैलियां और जन सभाएं होंगी। स्वामी अग्निवेश पर हमले की राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति पानाचन्द जैन एवं आई.एस. ईसरानी, पूर्व मुख्य न्यायाधिपति एस.एन. भार्गव एवं नवरंगलाल टिबरीवाल तथा पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी सत्यनारायण सिंह ने घोर निन्दा की है और यह कहा कि यह लोकतंत्र पर हमला है।

हम किस तरह अपने वतन को समझें? जहां अकारण स्वामी अग्निवेश को पीटा गया, शशि थरूर के घर पर हमला हुआ और सरकार नाम को जो सफेद हाथी हमने पाल रखा है उसकी कोई आवाज सुनाई ही नहीं दी? अगर देश-समाज ऐसे ही चलना है तो किसी चलाने वाले की जरूरत ही क्यो है?

वतन की पहचान

- **कुमार प्रशांत**, लेखक और कार्यकर्ता

वह जन्म अल्लामा इकबाल ने लिखी थी, जिसमें हर बंद के बाद वे कहते थे - मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है! मैं जितनी बार उस नज्म को पढ़ता हूँ, भीतर से कोई पूछता है कि इकबाल ने तो अपने वतन की पहचान कर ली थी, अब बताओ तुम अपने वतन की पहचान क्या और कैसे करते हो? जवाब नहीं दे पाता हूँ। हम किस तरह अपने वतन को समझें? जहां अकारण स्वामी अग्निवेश को पीटा गया, शशि थरूर के घर पर हमला हुआ और सरकार नाम का जो सफेद हाथी हमने पाल रखा है उसकी कोई आवाज सुनाई ही नहीं दी? अगर देश-समाज ऐसे ही चलना है तो किसी चलाने वाले की जरूरत ही क्यों है?

प्रधानमंत्री कहीं ललकारते हुए पूछ रहे थे कि कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमान नामदार बताएं कि उनकी पार्टी मुसलमान पुरुषों की ही पार्टी है कि उसमें मुसलमान स्त्रियों की भी जगह है? मुझे मालूम नहीं कि प्रधानमंत्री ने 'नामदार' विशेषण का इस्तेमाल किस भाषा विशेषज्ञ की सलाह से किया होगा, लेकिन राहुल गांधी के अपमान का यह तरीका कुरुप था। जवाब में कांग्रेस की एक प्रवक्ता कह रही थी कि प्रधानमंत्री की भाषा और तर्क अब मर्यादाएं खो रहे हैं। लेकिन यह भी कोई जवाब नहीं हुआ। बताना तो पड़ेगा कि कांग्रेस इस देश में रहने वाले सभी नागरिकों की पार्टी है। कांग्रेस समझ नहीं पा रही कि राजनीतिक जमीन हड़पने की बेजा कोशिश में वह अपनी जमीन खोरही है। कांग्रेस जितना जनेऊ पहनेगी, मंदिरों में माथा टेकेगी, मुसलमानों को अलग कर अपना बताएगी, उतनी ही खोखली होती जाएगी।

शशि थरूर के भारत के 'हिन्दू पाकिस्तान' बनने के खतरे संबंधी बयान को लेकर भाजपा के समर्थन किन्हीं सुमीत चौधरी ने कोलकाता की अदालत में धार्मिक भावनाओं को आहत करने तथा संविधान के अपमान का केस दर्ज किया। अब बता सकें तो हमारे न्यायतंत्र के मुखिया दीपक मिश्रा बताएं कि जिस न्याय-व्यवस्था ने लाखों मुकदमों को सालों से अधर में लटकाए रखा है, उसके पास इतनी फुर्सत और कुव्वत भी है कि वह ऐसे अर्थहीन मुकदमों को सुनने का समय निकाले?

हम देख रहे हैं कि 2014 से जो दल भाजपा के साथ कदमताल कर रहे थे, वे अचानक 'पीछे मुड़' करने लगे हैं। कुछ वहां से निकाल आए, कुछ निकलने के चक्कर में हैं। क्या यह डूबते जहाज से भागना है? दूसरी तरफ बिखरा विपक्ष एक मंच पर आने की कोशिश में है। लेकिन राजनीति में जो दीखता नहीं, वह होता नहीं। विपक्ष के लोग इतने विकट हैं कि एक-दूसरे का रास्ता काटने में देख ही नहीं सकेंगे कि उनके सारे रास्ते बंद होते जा रहे हैं!

लेकिन रास्ता बंद होने का डर कहीं दूसरी जगह भी व्याप रहा है। प्रधानमंत्री विपक्ष पर 'गंभीर आरोप' लगा रहे हैं कि सब उन्हें हटाने के लिए एक हो रहे हैं। कोई उनसे पूछे कि इसमें गलत क्या है? विपक्ष का काम ही यही है। देखें तो सिर्फ इतना कि विपक्ष कुछ अनैतिक या असंवैधानिक तो नहीं कर रहा? एक सावधान, सजग लोकतांत्रिक जनता के लिए यह सब देखना और आंकना जरूरी है क्योंकि राजनीतिक दलों का अंतिम सत्य है सत्ता और जनता का अंतिम सत्य है संस्कार और संविधान। इसलिए प्रधानमंत्री की आपत्ति महज भयभीत मन की अभिव्यक्ति है।

अपनी सत्ता के ख्याल से ये लोग इतने भयभीत हैं कि जनता और उसके सवाल अब गलती से भी उनकी जबान पर नहीं आते। उत्तरप्रदेश जा कर कोई एनार्की की बात न करे; सारे देश में महिलाओं के साथ हो रहे अकल्पनीय दुराचार की बात किए बिना ही कोई अपनी उपलब्धियों का बखान करे; खेती-किसानों को दी जा रही 'रिकॉर्ड छूट' के लिए अपनी पीठ ठोकते लोग पल-भर भी न झिझकें कि पिछले 90 दिनों में 600 से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या कर ली है और आत्महत्या का दायरा राष्ट्रव्यापी होता जा रहा है - तो पूछना ही पड़ता है : ये किस देश के लोग हैं?

किसान-मजदूर-छोटे व्यापारियों की आत्महत्या अब किसी एक राज्य की बात नहीं रह गई। नागरिक जीवन विकृतियों और विद्रूपताओं से इस तरह गजबजा रहा है कि सामान्य जीवन जीना ही महाभारत की लड़ाई हो गया। आप भले सड़क पर न चलते हों - क्योंकि आप तभी चलते हैं जब सड़कें बंद कर दी जाती हैं - लेकिन सड़क पर चलने वाला आम नागरिक बेहद परेशान है। जीविका भी नहीं बची है, जीवन भी नहीं बचा है। बढ़ती महंगाई से परेशान आम आदमी अपने धैर्य की अंतिम बूंद तक निचोड़ कर जीने की कोशिश में लगा है। मगर आप कानूनी, गैर-कानूनी तमाम रास्तों को अंतिम हद तक निचोड़ कर अपनी सरकार बनाने में लगे हैं।

गांधी ने हमारे शासकों को एक ताबीज दिया था : कोई भी फैसला करने से पहले अपने अहंकार का शमन करो और उस सबसे गरीब व्यक्ति का चेहरा सामने रखो कि जिसे तुमने देखा हो; और फिर खुद से पूछो कि तुम जो फैसला करने जा रहे हो उससे इस आदमी की किस्मत में कोई फर्क पड़ेगा? जवाब हां हो तो निर्द्वंद्व आगे बढ़ो, जवाब ना हो तेा उस फैसले को रद्द कर दो। अब यह ताबीज बेअसर हो गया है, क्योंकि अब आपकी स्मृति में वह चेहरा बचा कहां जिसे याद करने की बात गांधी कहते थे।

इस खतरे को समझें

खुफिया विभाग की इस सूची को हल्के में लेना ठीक नहीं होगा कि दो खालिस्तानी आतंकी संसद को उड़ाने की मंशा लेकर नेपाल के रास्ते देश में घुस चुके हैं।

भारत में आतंकवाद की पहली झलक खालिस्तानी आतंक के दौर में ही दिखी थी। अस्सी के दशक में तेजी से फन उठाने के बावजूद इसे कुचल कर सरकारों ने भले ही पीठ थपथपा ली हो, पर इस सच से कोई मुंह नहीं चुरा सकता कि सिख समुदाय की देशभक्ति पर सवाल उठाने वाली हरकतों का मुंहतोड़ जवाब स्वयं इसीसमुदाय ने न दिया होता तो पंजाब में शांति बहाली संभव नहीं थी। हरित क्रांति के कारण पंजाब में जो समृद्धि आई थी उसने महत्त्वाकांक्षाओं को आसमान पर पहुंचा दिया था। खालिस्तानी आतंक उसी की परिणति था। अलग देश की मांग सत्ता की उपेक्षा से उपजे असंतोष की देन नहीं, बल्कि ज्यादा तवज्जों से पैदा अहंकार का नतीजा थी। तब कहा जाता था कि यदि पंजाब को भारत जैसे गरीब देश से अलग कर दिया जाए तो दुनिया के नक्शे पर कनाडा जैसा एक नया विकसित देश चमकने लगेगा। आज उसी कनाडा में पंजाब से पलायन कर गए सिखों का अच्छा दबदबा है और यह संभावना जोर मार रही है कि जल्द ही वहां सिख प्रधानमंत्री होगा। वर्तमान प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की राजनीतिक मजबूरी को समझा जा सकता है जिसके तहत उन पर खालिस्तानी आतंकवादियों को शह देने के आरोप लग रहे हैं।

अब हरित क्रांति से मिले महत्त्व का दौर बीत चुका है। खेती से मुनाफा लगातार कम हुआ है और किसान कर्ज के जाल में फंस चुके हैं। बेरोजगार युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है और तेजी से बढ़ता अवसाद उन्हें अपराध व नशे की दुनिया का गुलाम बना रहा है। पंजाब के लिए यह समस्या नए तरह की है पर है एकदम देसी। देश के पिछड़े इलाकों के युवा तो हमेशा से ऐसे दंश झेलते रहते हैं। गुमराह भी होते रहे हैं। कभी व्यवस्था परिवर्तन की क्रांति के नाम पर तो कभी धार्मिक अस्मिता की रक्षा के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता रहा है। पंजाब में छिटपुट आपराधिक हरकतों से मिल रहे ऐसे संकेत चिंतित करने वाले हैं। पिछले कुछ सालों में कई गैर-सिख नेताओं की हत्या में विदेश में बैठे अलगाववादी आकाओं की भूमिका के सबूत मिले हैं। पुलिस मान रही है कि खालिस्तान समर्थक संगठनों व स्थानीय आपराधिक गिराहों की मदद से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ अपने उद्देश्य पूरे कर रही है।

इसलिए खुफिया विभाग की इस सूचना को हल्के में लेना ठीक नहीं होगा कि दो खालिस्तानी आतंकी संसद को उठाने की मंशा लेकर नेपाल के रास्ते देश में घुस चुके हैं। दोनों के संबंध नाभा जेल से भागे आतंकी हरमिंदर सिंह मिंटू से बताए गए हैं। जेल से भागने के बाद दिल के दौरे से मर चुके खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट के स्वयंभू प्रमुख मिंटू को आइएसआइ का सहयोग था और वह स्थानीय युवाओं को आतंक के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता रहा था। यह कहने की जरूरत नहीं कि पंजाब के युवा आतंक के रास्ते पर चलने का अंजाम जानते हैं और किसी के बहकावे में जल्दी नहीं आएंगे पर बेरोजगारी ओर अवसाद कभी किसी को विवेकशून्य बना सकता है। इसलिए विदेशी साजिश से सावधान रहने के साथ-साथ हमें देशी स्थितियों में सुधार लाने पर गंभीरता से सोचना चाहिए।

क्षेत्र में पुलिस बल तैनात

हरमाड़ा में धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का मामला, 5 पकड़े

जयपुर। हरमाड़ा थाना पुलिस ने नांगल पुरोहितान में देवी-देवताओं पर टिप्पणी करने और धर्म विशेष का प्रचार-प्रसार करने के मामले में 5 लोगों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी लखन सिंह के अनुसार आरोपियों से पूछताछ और जांच में सामने आया कि गांव के सरकारी स्कूल का शिक्षक अल्ताफ हुसैन धर्म परिवर्तन के लिए बच्चों-लोगों को बरगला रहा था। बच्चों को घुमाने ले जाने के दौरान धर्म विशेष की अच्छाइयां बताता और धर्म बदलने के लिए प्रेरित करता था। गांव में एक सैलून पर संचालक मनोज सेन और सतपाल उर्फ मोनू भी कई दिन से देवी-देवताओं पर अभद्र टिप्पणी कर रहे थे।

दुकान पर आने वालों को धर्म विशेष को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे थे। बुधवार दोपहर एक युवक और वहां मौजूद लोगों को भी आरोपी इसके लिए प्रेरित करने लगे तो युवक ने गांव के लोगों को बताया। आक्रोशित लोगों को दुकान की ओर आते देख दोनों भाग गए। बाद में पुलिस ने मनोज, उसके पिता रामबाबू और सतपाल को गिरफ्तार कर लिया लेकिन गुरुवार को गांव के ही पप्पू कुमावत और सुरेश कुमावत भी धर्म परिवर्तन के लिए लोगों को प्रेरित करने लगे। इस पर गांव में फिर आक्रोश फैल गया। बाद में पुलिस ने इन दोनों को भी गिरफ्तार कर लिया।

इन आरोपियों के पीछे शिक्षक अल्ताफ हुसैन का हाथ होना सामने आया। पुलिस ने ग्रामीणों की रिपोर्ट पर शिक्षक के खिलाफ भी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का मामला दर्ज किया है और उसकी तलाश की जा रही है।

फिलहाल शांति है- धर्म को लेकर टिप्पणी करने व अन्य धर्म के प्रचार को लेकर लोगों में आक्रोश हो गया था। मामले में पांच लोग गिरफ्तार हुए हैं जबकि सरकारी स्कूल के शिक्षक अल्ताफ हुसैन को तलाशा जा रहा है। अब क्षेत्र में फिलहाल शांति है।

-अशोक गुप्ता, डीसीपी पश्चिम, जयपुर कमिश्नरेट

उफ! ये कैसे पंच-परमेश्वर

बस टिटहरी का अंडा फूट गया...

छह साल की बच्ची को पंचायत ने जाति से निकाल बाहर किया

10 दिनों तक घर के बाहर तेज गर्मी में टिनशेड के नीचे अकेली अछूत की तरह रही

बूंदी। फूल सी मासूम छह साल की खुशबू दो जुलाई को पहली बार स्कूल गई थी। उसी दिन स्कूलों में बच्चों को दूध पिलाने की योजना शुरू हुई थी। दूध के लिए बच्ची लाइन में लगी तो टिटहरी के घोंसले पर पैर चला गया। एक अंडा क्या फूट गया... बवंडर आ गया। बूंदी के हरिपुरा गांव में पंचायत बैठी। बच्ची को जीव हत्या का दोषी मानते हुए जाति से बाहर निकालने का फरमान सुना दिया गया। घर के बाहर टिनशेड में बच्ची ने तेज गर्मी में पूरे दस दिन बिताए। बच्ची रोती... तो भी मां मीना उसे हाथ नहीं लगा सकती थी। खबर कलेक्टर-एसपी के पास पहुंची तो पंचों पर दबाव बनाकर बच्ची की घर वापसी कराई। राज्य मानवाधिकार आयोग ने बूंदी-कलेक्टर एसपी से अब इस संबंध में रिपोर्ट मांगी है।

-10 दिन बच्ची ऐसी सजा भुगतती रही, गांव वालों को अपने स्तर पर इससे निबट लेना चाहिए था। पता चलते ही तहसीलदार, थानेदार को तुरंत कार्रवाई के आदेश दे दिए गए। **-महेशचन्द्र शर्मा**, कलेक्टर

10 दिनों तक बच्ची को इसी तरह ऊपर से, दूर से खाना दिया जाता रहा।

एक मासूम अपराध के बदले इतना बड़ा पाप

रोते हुए बच्चों को हंसाना... ईश्वर की पूजा के समान माना गया है। पंच भी ईश्वर का ही रूप कहे गए हैं। लेकिन ईश्वर बच्चों को नहीं रुलाते। ये कैसे पंच हैं,जो एक मासूम बच्ची के खिलाफ खड़े हो गए। अपनी पूरी ताकत... एक बच्ची को रुलाने में लगा दी। दस दिनों तक उस मासूम ने जो पीड़ा भोगी-देखी, निश्चित तौर पर उसके दोषी तय होने चाहिए। ऐसी मिसाल बननी चाहिए कि जातीय पंचायतें कोई भी फैसला सुनाने से पहले सौ बार सोचें...क्योंकि ये समाज के भरोसे पर ही टिकी हुई हैं।

पंचों का जुर्माना...गाय के लिए चारा, खुद के लिए शराब

बच्ची को जाति से निकाला ही, पंचों ने बच्ची के पिता हुकमचंद पर जुर्माना भी लगा दिया। कहा गया : गायों को चारा, मछलियों को आटा, कबूतरों को ज्वार डाले...और एक किलो भूंगड़े (सिके हुए चने), एक किलो नमकीन और अंग्रेजी शराब की बोतल पंचायत को दी जाए। तीन दिन बाद पंचायत फिर बैठी, पर बात इस पर अड़ गई कि हुकमचंद एक पंच से कुछ साल पहले उधार लिए डेढ़ हजार रुपए तत्काल चुकाए।

भोजन में मीठा, नमकीन, खट्टा, तीखा, कड़वा और कसैला का होना जरूरी, आहार की गड़बड़ी से शरीर में दोष और रोग

आयुर्वेद में तीन तरह के आहार, छह रस वाला भोजन होता है पौष्टिक

आयुर्वेद में भोजन को स्वास्थ्य का प्रमुख तत्व माना जाता है। अच्छा आयुर्वेदिक आहार व्यक्ति विशेष के शरीर की प्रकृति पर आधारित होता है, जो उसे पोषण देता है। आहार बीमारियों से भी दूर रखता है। महिलाओं को उम्र के हिसाब से अपने खानपान का खास ख्याल रखना चाहिए ताकि शरीर में ऊर्जा बनी रहे और बीमारियों से बचाव हो सके। जानते हैं आयुर्वेद विशेषज्ञ से खानपान को लेकर क्या सावधानियां बरतनी चाहिए।

आयुर्वेदिक आहार : आयुर्वेद में माना जाता है कि कोई भी बीमारी शरीर में पाए जाने वाले तत्वों के असंतुलन के कारण होती है। जब आयुर्वेद के तीनों तत्त्वों वायु, पित्त और कफ में किसी में असंतुलन होता है तो इसे दोष कहा जाता है। जैसे यदि किसी व्यक्ति में वात की अधिकता है तो उसे चक्कर आएगा, पित्त की अधिकता है तो सूजन होगी और कफ का असंतुलन होने पर उसे बलगम ज्यादा बनता है। आयुर्वेद में आहार की तीन श्रेणियां हैं।

सात्विक आहार : यह सभी आहारों में सबसे शुद्ध होता है। शरीर को पोषण, मस्तिष्क को शांत, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसमें साबुत अनाज, ताजे फल, सब्जियां, गाय का दूध, घी, फलियां, मेवे, अंकुरित अनाज, शहद और हर्बल चाय शामिल होती है।

राजसिक आहार : यह भोजन प्रोटीन आधारित और मसालेदार होता है। अत्यधिक शारीरिक श्रम करने वाले इस भोजन का इस्तेमाल कर सकते हैं।

तामसिक आहार : इसमें रिफाइंड भोजन शामिल होते हैं। यह डीप फ्राई और मसालेदार होते हैं। इनमें नमक की मात्रा भी अधिक होती है। यह आलस्य बढ़ाते हैं।

पोषक तत्त्वों का बना रहता संतुलन

भोजन में छह रस शामिल होने चाहिए। मीठा, नमकीन, खट्टा, तीखा, कड़वा और कसैला। वात प्रकृति के लोगों को मीठा, खट्टा और नमकीन, कफ प्रकृति के लोगों को कड़वा, तीखा, कसैला और पित्त प्रकृति के लोगों को मीठा, तीखा और कसैला भोजन करना चाहिए। इससे शरीर में पोषक तत्त्वों का असंतुलन नहीं बढ़ता है।

आयुर्वेदिक डाइट प्लान

ऑर्गेनिक भोजन ऊर्जा से भरपूर होता है। कम तेल और कम मसालों में सब्जियों को लगातार हिलाते हुए हल्का तलकर बनाएं। मौसमी फल, दूध, छाछ, दही, पनीर, दालें, सोयाबीन और अंकुरित अनाज लें। चीनी की जगह शहद, गुड़, मैदे के बजाए चोकरयुक्त आटा व दलिया खाएं। भोजन न तो ज्यादा पका हो और न ही कम पका होना चाहिए।

आहार के सिद्धांत

हमारा भोजन वह आधार है जिससे हमारे शरीर का निर्माण होता है। चरक संहिता के अनुसार किसी भी रोग से मुक्ति के लिए उचित आहार लेने का अत्यंत महत्व है। औषधि के प्रयोग से मिलने वाला लाभ उचित आहार लेने से ही मिल सकता है। सात्विक भोजन औषधि लेने से 100 गुना अधिक लाभदायक है।

-डॉ. भारती कुमार मंगलम,
प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष) स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग,
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

अग्निवेश पर हमला: कुछ तो मुंह खोलें

स्वामी अग्निवेशजी के साथ झारखंड के एक जिले में भीड़ ने जो व्यवहार किया है, वह इतना शर्मनाक और

वेदप्रताप वैदिक

वहशियाना है कि उसकी भर्त्सना के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। एक संन्यासी पर आप जानलेवा हमला कर रहे हैं और 'जय श्रीराम' का नारा लगा रहे हैं। आप श्री राम को शर्मिंदा कर रहे हैं। आपको राम देख लेते तो अपना माथा ठोक लेते। आप खुद को रावण की औलाद सिद्ध कर रहे हैं। आप अपने आपको हिंदुत्व का सिपाही कहते हैं। अपने आचरण से आप हिंदुत्व को बदनाम कर रहे हैं। क्या हिंदुत्व का अर्थ कायरपन है ? इससे बढ़कर कायरता क्या होगी कि एक 80 साल के निहत्थे संन्यासी पर कोई भीड़ टूट पड़े? उसे डंडे और पत्थरों से मारे? उसके कपड़े फाड़ डाले, उसकी पगड़ी खोल दे, उसे जमीन पर पटक दे? स्वामी अग्निवेश पिछले 50 साल से मेरे अभिन्न मित्र हैं, संन्यासी बनने के पहले से! वे तेलुगुभाषी परिवार की संतान हैं और हिंदी के कट्टर समर्थक हैं। महर्षि दयानंद के वे अनन्य भक्त हैं और कट्टर आर्य समाजी हैं। वे संन्यास लेने के पहले कलकत्ते में प्रोफेसर थे। वे एक अत्यंत सम्पन्न और सुशिक्षित परिवार के बेटे होने के बावजूद संन्यासी बने। उन्हें पाकिस्तान का एजेंट कहना कितनी बड़ी मूर्खता है। उन्हें गोमांस-भक्षण का समर्थक कहना किसी पाप से कम नहीं है। उन्होंने और मैंने हजारों आदिवासियों, ईसाइयों और मुसलमानों मित्रों का मांसाहार छुड़वाया है। उन्हें ईसाई मिश्नरियों का एजेंट कहने वालों को पता नहीं

है कि अकेले आर्य समाज ने इन धर्मांध विदेशी मिश्नरियों को भारत से खदेड़ा है। अग्निवेशजी पर हमला करने के पहले उन पर ये सब आरोप लगाना पहले दर्जे की धूर्तता है। अग्निवेशजी ने जिस शिष्टता से उन हमलावर प्रदर्शनकारियों को अंदर बुलाया, उसका जैसा जवाब उन्होंने दिया है, वह जंगली जानवरपन से कम नहीं है। स्वामी अग्निवेशजी के कुछ विचारों और कामों से मैं भी सहमत नहीं होता हूं। उनकी आलोचना भी करता हूं। लेकिन उनके साथ इस तरह का जानवरपन करने का अधिकार किसी को भी नहीं है। ये हमलावर यदि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा से संबंधित हैं तो मैं मोहन भागवतजी और अमित शाह से कहूंगा कि वे इन्हें तुरंत अपने संगठनों से निकाल बाहर करें और इन्हें कठोरतम सजा दिलवाएं। इस तरह के लोगों के खिलाफ कठोर कानून बनाने की सलाह सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार को दी है लेकिन सरकार का हाल किसे पता नहीं हैं। वह किंकर्तव्यविमूढ़ है। उसे पता ही नहीं है कि उसे क्या करना चाहिए। देश में भीड़ द्वारा हत्या की कितनी घटनाएं हो रही हैं लेकिन दिन-रात भाषण झाड़ने वाले हमारे प्रचारमंत्रीजी इस मुद्दे पर अपना मुंह खोलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते। यदि सर संघचालक मोहन भागवत भी चुप रहेंगे तो राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के बारे में जो शशि थरुर ने कहा है, वह सच होने में देर नहीं लगेगी।

स्वामी अग्निवेश पर हमले के विरुद्ध.....

(पृष्ठ 2 का शेष)

विचारों को लागू करने का कार्य गांव-गांव तक करने के लिए प्रेरित किया।

धरने प्रदर्शन का सहसंयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने बड़ी ही कुशलता के साथ किया तथा वे बीच-बीच में भारत माता की जयकारों के नारे लगवाते रहे, स्वामी अग्निवेश जी पर हुए अत्याचार की घोर निन्दा की और कई नारे लगवाते रहे - जैसे 'मॉब लिंचिंग, नहीं चलेगी-नहीं चलेगी', 'स्वामी अग्निवेश जी पर हुए कायरतापूर्ण हमले की आर्य समाज घोर निन्दा करता है।' स्वामी अग्निवेश जी पर हुए हमले के दोषियों को कड़ी सजा दो', 'लिंचिंग कल्चर नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।' ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने बीच-बीच में हमलावर संगठन को जमकर ललकारने का कार्य किया जिसका सभी लोगों ने समर्थन किया। ब्र. दीक्षेन्द्र जी का साथ कई नौजवान साथी दे रहे थे जिसमें उत्तर प्रदेश से पधारे ब्र. सहसरपाल जी, श्री धर्मेन्द्र कुमार जी, श्री अशोक कुमार जी, श्री जावेद जी आदि लोग लगे हुए थे।

हरियाणा से पधारे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रणवीर एडवोकेट ने सरकार को ललकारते हुए कहा कि 80 वर्षीय स्वामी अग्निवेश जी पर कायराना हमले को हम सब बिल्कुल भी सहन नहीं करेंगे और आर.एस.एस. की गुण्डागर्दी नहीं चलने देंगे।

नोएडा आर्य समाज की प्रधाना बहन गायत्री मीणा जी ने स्वामी जी के ऊपर हुए हमले की कड़े शब्दों में घोर निन्दा करते हुए कहा कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाये। साथ ही आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि देश में फैले पाखण्ड के विरोध के लिए हम सबको स्वामी जी के साथ खड़ा होना पड़ेगा। जो लोग स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं उन्हें आर्य समाज के विचारों के साथ खड़ा होना पड़ेगा, अन्यथा केवल आर्य समाज में बैठने से कुछ नहीं होने वाला है।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने भी स्वामी अग्निवेश जी के ऊपर पाकुड़, झारखण्ड में हुए हमले की घोर निन्दा करते हुए अपना रोष व्यक्त किया तथा इस सम्बन्ध में और बड़े स्तर पर पूरे देश में प्रदर्शन करने की चेतावनी दी। बहन जी ने आर्यों से कहा कि जो लोग अपने नाम के आगे आर्य लिखते हैं यदि वे स्वामी दयानन्द जी के बताये हुए रास्ते पर चलते हैं तो ठीक है अन्यथा उन्हें अपने नाम के आगे आर्य लिखना बन्द कर देना चाहिए।

इस अवसर पर अनेक लोगों ने अपने विचार रखे जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, बहन पदमिनी कुमार, दिल्ली पुरोहित सभा के पूर्व अध्यक्ष आचार्य अमरदेव शास्त्री जी, शिव पाण्डे, मानव सेवा प्रतिष्ठान के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री जी, सर्वधर्म संसद के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी सुशील जी महाराज, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री स्वामी नित्यानन्द जी, महाराष्ट्र से श्री सुभाष निम्बालकर, सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री राम सिंह आर्य जी सहित आदि लोगों ने अपने उद्बोधन दिये। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या भी उपस्थित थीं। अन्य प्रान्तों से वैदिक मण्डल के संगठनमंत्री स्वामी सोम्यानन्द जी, स्वामी योगानन्द जी, लोकशक्ति मंच हरियाणा के प्रधान श्री धर्मवीर सरपंच पधारे, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रामानन्द प्रसाद जी, उपमंत्री श्री अरूण आर्य, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश जी, श्री हरदेव आर्य शिवगंज, श्री चांदमल जी जोधपुर, श्री भंवर लाल आर्य राष्ट्रीय संयोजक आर्य वीरदल, श्री हरि सिंह आर्य, श्री मदन गोपाल, श्री जितेन्द्र आर्य, श्री शिवदत्त आर्य जालौर, श्री दलबीर आर्य, श्री जयवीर आर्य, रमेश आर्य (हिसार), आगरा से श्री रमाकान्त सारस्वत, डॉ. बलवीर आर्य, मास्टर सत्यवीर आर्य, डॉ. राजपाल आर्य, श्री विरेन्द्र लाठर विद्यासागर शास्त्री, श्री जसवन्त आर्य, श्री रामफल दहिया, श्री जोरा सिंह आर्य, आचार्य सोमदेव शास्त्री, श्री चन्द्रदेव शास्त्री, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री ऋषिपाल शास्त्री, श्री रामपाल शास्त्री-नरेला, श्री भानू सिंह, श्री तोताराम, स्वामी विजयवेश जी, श्री मायाराम, श्री बाबूलाल जूई, श्री महेन्द्र आर्य-जूई, गुरुकुल गोमत, अलीगढ़ तथा गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारी भारी संख्या में उपस्थित थे, फरीदाबाद से भारी संख्या में महिलाएँ एवं पुरुष भारी संख्या में उपस्थित हुए।

प्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक राही के व्यंग्य

सत्ता और रसगुल्ला

लार टपकायी नहीं जाती है, टपक जाती है। सामने आने की तो छोड़ो, आप अगर अपनी पसन्दीदा खाद्य सामग्री को याद भर कर लें तो आपके मुंह में पानी भर जाता है। खट्टा नींबू, खट्टी इमली, खट्टा कैरी और अमचूर को देखते ही अच्छे-अच्छों की लार टपकने लगती है। लेकिन हमारे कई नेताओं की लार लड्डू, जलेबी, रबड़ी, पूड़ी, पकौड़ी, मिठाई, रायते पर नहीं वरन नोटों से भरे ब्रीफकेस, हीरे-जवाहरात और मलाईदार कुर्सी पर ही टपकती है। कुर्सी पाने के लिए तो नेता शीर्षासन, दण्डासन और न जाने कौन-कौन से आसन कर सकते हैं।

बहरहाल अगले बरस मोटा भाई की कुर्सी को पुख्ता करने के लिए नगर-नगर, डगर-डगर घूम रहे छोटा भाई ने एक रहस्य उद्घाटित कर दिया कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर विपक्ष लार टपका रहा है। दो बरस पहले तक नीतिश बाबू को विपक्ष का चेहरा माना जा रहा था लेकिन अब उस भाजपा के सहारे ही सरकार चला रहे हैं जिसे कोस कर उन्होंने बिहार की सत्ता हासिल की।

उत्तर प्रदेश में बुआ-भतीजे यानी मायावती और अखिलेश की सम्मिलित रणनीति ने उपचुनावों में भाजपा की बिछी खाट को न केवल खड़ा कर दिया और संकेत दे दिए कि यही हाल रहा तो सन् उन्नीस में वे उत्तर प्रदेश से भाजपा की जाजम उठा देंगे। बिहार में सहारा नीतीश कुमार का है और नीतीश कुमार भी अपने सिपहसालारों के सहारे प्रतिदिन एक नई मांग उठा रहे हैं। अगर बिहार में भाजपा की थाली में नीतीश रूपी रसगुल्ला नहीं रहेगा तो फिर सत्ता की ज्यौनार फीकी रह सकती है। अब एक साल 'चुनावों का बरस' है। बड़े राज्यों के साथ दिल्ली दरबार के लिए वोट पड़ने हैं। सारे रसोईए अपनी-अपनी भट्टियां तैयार कर रहे हैं। सब चाहते हैं कि उसके भोज में ज्यादा से ज्यादा पकवान दीखे।

विपक्षी भी ताल ठोक रहे हैं और भाजपा कभी नहीं चाहती कि कोई महागठबंधन बने। अगर बन गया तो उनकी चुनावी ज्यौनार उजड़ जाएगी। नीतीश रूपे रसगुल्ले का अपना महत्त्व है तभी तो शाहजी मुस्कुरा रहे हैं। इधर जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं, दोनों प्रमुख दलों में ऐसे रसदार नेताओं को अपनी थाली में सजाने की दौड़ शुरू हो जाएगी जिनका नाम सुनते ही 'जनता उर्फ मतदाता' के मुंह में लार आने लगे।

एक जमाने में फिल्मी नायक-नायिकाओं को राजनीतिक पकवरन बनाकर पेश किया गया था। वैजयंतीमाला, अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना, हेमा मालिनी, धर्मेन्द्र, जया भादुड़ी, जया प्रदा जैसी अभिनेत्री और अभिनेताओं की लंबी फेहरिस्त है। कोई कुछ भी कहे पर हम तो मतदाताओं से यही गुजारिश करेंगे कि 'सजावटी पकवानों' जैसे उम्मीदवारों के बजाए उसी को चुने जो वक्त पर आपके काम आए।

बेईमानों को सजा

अशोक राही

बड़ा द्वंद्वात्मक प्रश्न है? क्या बेईमान आदमी शरीफ नहीं हो सकता? या शरीफ आदमी, बेईमान नहीं हो सकता। इस दुनिया में ऐसा क्या है जो संभव नहीं। इश्क की दुनिया में तो बोलबाला ही ऐसे भोले-भाले चेहरों का रहा है - भोली सूरत दिल के खोटे, नाम बड़े और दर्शन छोटे। कभी-कभी समाचार पत्रों में खबर पढ़ने को मिलती है कि फलां नेता पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे। उस नेता की सरल, सौम्य और दर्शनीय फोटो देख कर तो यकीन ही नहीं होता कि वह भी 'भ्रष्ट' हो सकत है। भोली सूरत के सहारे ठगी करने वालों की तो कमी नही। आपके पास बैठ कर ऐसी-ऐसी मीठी बातें करेंगे, ऐसी आकर्षक योजनाओं का गुणगान करेंगे कि आप तुरंत उनके कहे अनुसार अपना धन लगा देंगे और थोड़े दिन बाद आप अपना सिर पकड़ कर रोते नजर आएंगे। पता चलेगा कि सारी योजना ही ठगी का एक महाजाल था।

राजनीतिज्ञों के भ्रष्टाचार के मामले में तो हम किसी से कम नहीं लेकिन हमारा पड़ोसी पाकिस्तान भी हमारे ही नक्शेकदम पर है। उनके नेता भी नेता जनता का माल हड़पने में जरा भी कोताही नहीं बरतते। लेकिन एक मामले में वे हमसे आगे हैं - बेईमान नेताओं को पकड़ने और उन्हें सजा दिलवाने में। अभी हाल में ही जनाब नवाज शरीफ को भ्रष्टाचार के लिए दस साल की कैदेबामुशक्कत सुनाई गई। पाकिस्तानी अदालतें वहां के आला नेताओं को कई बार बेईमानी की सजा सुना चुकी है। इस मामले में हमारे देश में हाल कुछ और ही है। इल्जामों की बौछारें तो खूब होती हैं पर नतीजा सिफर। गड़े मुर्दे उखाड़ कर बदबू फैलाई जाती है, पर हासिल क्या होता है - वही ढाक के तीन पात। न्याय के मामले में कहा जाता है कि देर हो सकती है पर अंधेर नहीं। इसी उम्मीद पर हम भारतीय कायम रहते हैं। अब अपने प्यारे मियां साहब को ही लीजिए। सजा सुनाते वक्त वे लन्दन में थे। कह तो रहे हैं कि जल्द ही वतन वापस लौटूंगा लेकिन हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और। उनकी बेअी को भी सजा सुना दी गई, जो उनकी राजनीतिक उत्तराधिकारी भी है।

बहरहाल हम तो आपसे यही गुजारिश करते हैं कि कृपया न तो भोली, चिकनी सूरतों पर जाना और न ही झूठे लफ्फाजी भरे जुमलों पर भरमाना। इनकी शक्लों और बातों को पहले तर्क की कसौटी पर तौलना, फिर कोई निर्णय लेना। भूल जाना कि अपने देश में इन शरीफ बेईमानों पर कभी न्याय का चाबुक चलेगा। इन्हें ठीक करने का सिर्फ एक ही रास्ता है कि बैलट के जोर से इन्हें कुर्सी से गिरा देना। अगर बेईमानी के सबूत इकट्ठे करते रहे तो सदियां गुजर जाएंगी। जिन पनामा पेपर्स की बदौलत जनाब नवाज शरीफ को बेईमान ठहराया गया है, उन्हीं में हमारे देश के भी दर्जनों बेईमानों के नाम हैं। लेकिन अपने देश में तो अभी तक पत्ता भी नहीं हिला। जय हो भ्रष्टाचार की।

।।ओ३म्।।

21वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक 6 से 8 अक्टूबर 2018

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में

- अनेक मान्य संन्यासीवृन्द, आर्यनेता, आर्यविद्वान् व विदुषियाँ आर्य श्रेष्ठिगण पधारेंगे व हमें प्रेरणा प्रदान करेंगे।
- सशक्त मंच सदैव से सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों की पहचान रही है।
- आपसे निवेदन है अधिक से अधिक संख्या में इस मनोरम विश्वप्रसिद्ध नगरी में पधारें और महर्षिवर देव दयानन्द की कर्मस्थली पर आर्यजगत् के पूज्य विद्वानों के सान्निध्य में अपने अन्दर नूतन ऊर्जा का संचार करें।
- कृपया अपना अर्थ सहयोग श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नाम चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट से भेजें। न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

निवेदक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

सम्पर्क- 0294-2417694, चलभाष- 07229948860, 09314235101, 09829063110, 09314535379

Website- www.satyarthprakashnyas.org

E-mail : satyarthnyas1@gmail.com, satyarthsandesh@gmail.com

।। ओ३म् ।।

वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुदित।

सम्पादक मण्डल

चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी

फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951

M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com

आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

-:: डाक वापसी का पता ::-

आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4
राजस्थान

प्रेषित : ....

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
JaipurCity/250/2015-17